भारत के टेराकोटा मंदिर

टेराकोटा अथवा पकी मिट्टी का प्रयोग प्रागैतिहासिक काल से बराबर किया जाता रहा है तथा इसे प्राचीनतम भवन निर्माण की सामग्रियों में से एक माना जाता है। उस समय के वास्तुविदों और कारीगरों को भवन निर्माण के कार्य में पत्थर अथवा अन्य भवन निर्माण सामग्री का अभाव कभी बाधा साबित नहीं हुआ। बल्कि उन्होंने मिट्टी की टाइलों में पौराणिक कथाओं को जीवन्त कर दिया तथा ईंटों में मानव जीवन को साकार कर मंदिरों के वास्तुशिल्प की एक नई शैली को जन्म दिया।

इन्द्रलाथ मंदिर, रानीपुर झारियल ईंटों से निर्मित सर्वाधिक ऊंचे प्राचीनतम मंदिरों में से एक है। बलुआ पत्थर से बने चबूतरे सहित इस मंदिर की ऊंचाई 80 फीट है। इस मंदिर के गर्भगृह में हाल ही मे लिंग अधिष्ठापित किया गया है। इसके अतिरिक्त, इस मंदिर में भगवान विष्णु, कार्तिकेय और उमा–महेश्वर की प्रतिमाएं भी विद्यमान हैं। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है तथा ऐसा माना जाता है कि यहां सबसे पहले इंद्र देव ने भगवान शिव की पूजा की थी तथा एक मंदिर का निर्माण कराया था।

मदन मोहन मंदिर, विष्णुपुर का निर्माण मल्ला राजा दुर्जन सिंह द्वारा ईस्वी सन् 1694 में करवाया गया था। विष्णुपुर में अन्य ऐसे मंदिरों की तुलना में यह मंदिर अपेक्षाकृत अधिक बड़ा एक–रत्न मंदिर है। इस मंदिर का आधार वर्गाकार है जो 12.2 मी. x 12.2 मी. है तथा इसकी ऊंचाई साधारण चबूतरे से 10.7 मी. ऊंची है। इस मंदिर की छत विशिष्ट बंगाली चाला प्रकार की है जोकि बंगाली मंदिरों की विशेषता है। इसमें ऊपर एकल शिखर है। इस मंदिर का निर्माण लैटराइट ब्लॉक के चबूतरे पर मिट्टी की ईंटों से किया गया है। मंदिर के बाहरी भाग को समृद्ध टेराकोटा की खूबसूरत पट्टिकाओं से सजाया गया है जिस पर महाकाव्यों, कृष्ण की लीलाओं और आखेट के दृश्यों तथा समकालीन सामाजिक जीवन से जुड़े पौराणिक कथा प्रकरणों को चित्रित किया गया है।

जोर बंगला मंदिर विष्णुपुर, जोकि केशता राय मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, का निर्माण मल्ला राजा रघुनाथ सिंह द्वारा ईस्वी सन् 1655 में कराया गया था। मंदिर की संरचना गांव की परंपरागत दो– चाला झोपड़ियों को मिलाकर बनने वाले आकार से मेल खाती है। झोपड़ियों के इस जोड़े की घुमावदार छत पर 'चार–चाला' शिखर है। मंदिर का आधार वर्गाकार है जिसका आकार 11.8 x 11.46 मी. है तथा चबूतरे से इसकी ऊंचाई 10.7 मी. है। इसकी दीवारों को अधिकतर टेराकोटा के पैनलों से सजाया गया है जिन पर महाकाव्यों, कृष्ण लीला, आखेट और समकालीन सामाजिक जीवन के अन्य दृश्य अंकित किए गए हैं।

लालजी मंदिर कालना कदाचित् कालना, पश्चिम बंगाल में स्थित टेराकोटा मंदिरों के समूह में प्राचीनतम मंदिर है। इस मंदिर का निर्माण महाराजा जगतराम की पत्नी, ब्रज किशोरी देवी द्वारा ईस्वी सन् 1739 में करवाया गया था। मंदिर के परिसर में पीले रंग के चमकीले गरूड़ के समक्ष राधा और कृष्ण की मुख्य प्रतिमाएं अधिष्ठापित हैं। लघु पट्टिकाओं, जिन्हें मंदिर के आधारभूत चबूतरे के चारों ओर लगाया गया है, पर पौराणिक कथाओं के दृश्यों को चित्रित किया गया है। मंदिर की छत पर निर्मित 25 शिखर (चोटियां) इसकी उल्लेखनीय विशेषता है।

निबिया खेरा मंदिर, भदवारा (9वीं–10वीं शताब्दी ईस्वी सन्) का निर्माण पंचायतना शैली में किया गया है जिसके अनुसार मध्य में मुख्य मंदिर के साथ–साथ चार गौण मंदिर भी बनाए गए हैं। हालांकि इन सभी गौण मंदिरों को कोनों पर नहीं बनाया गया है। तीन गौण मंदिरों का निर्माण कोनों पर किया गया है, परंतु एक मंदिर का निर्माण केंद्र में स्थित मंदिर की उत्तरी दीवार की सीध में किया गया है। केंद्र में स्थित मंदिर नगर मंदिर शैली के लैटिना शिखर का उत्तम नमूना है। इसके गर्भगृह में शिवलिंग विराजमान है। गर्भगृह के अंदर की पश्चिमी दीवार पर एक पैनल है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस पर एक आकृति कार्तिकेय और दूसरी वीरभद्र की हो सकती है। चारों गौण मंदिरों की निर्माण शैली एक जैसी है, ये सभी बिना छत के हैं तथा इनमें प्रवेश द्वार का आकार त्रिकोणीय है।

लक्ष्मण मंदिर, सिरपुर 7वीं शताब्दी ईस्वी का ईंटों से निर्मित मंदिर है जो भगवान शिव को समर्पित है। इस मंदिर के बाहरी भाग पर की गई महीन, जटिल नक्काशी इसकी विशेषता है। इन डिजाइनों में भगवान विष्णु, कृष्ण लीला से संबंधित प्रतीक और वैष्णव द्वारपाल शामिल हैं। गर्भगृह के द्वार के साथ–साथ शिखर और दरवाजे पर की गई नक्काशी अभी भी काफी हद तक अक्षुण्ण बनी हुई है जिसका अध्ययन किया जा सकता है। गर्भगृह के द्वार की चौखट पर किए गए उत्कीर्णन में शेषशैय्या पर विष्णु को लेटने की मुद्रा (अनन्तशयन विष्णु) में दिखाया गया है। एक पैनल पर भागवत पुराण से कृष्ण को अंकित किया गया है। दरवाजे के चारों तरफ नक्काशीदार पट्टियां हैं जिन पर विष्णु के दस अवतारों का चित्रण किया गया है। मंदिर को जगाती प्रस्तर के चबूतरे (लगभग 40' x 80') पर बनाया गया है जिसके चारों ओर परिक्रमा के लिए पर्याप्त स्थान छोड़ा गया है। पूरा मंदिर ईंटों से बना है। केवल गर्भगृह की नक्काशीकृत चौखट प्रस्तर से निर्मित है।

श्याम राय मंदिर विष्णुपुर का निर्माण ईस्वी सन् 1643 में राजा रघुनाथ सिंह द्वारा करवाया गया था। यह मंदिर निम्नस्थ वर्गाकार न्याधार (प्लिन्थ) पर खड़ा है जिसके चार–चाला छत के सभी कोने रत्न–जड़ित हैं। कोनों में निर्मित इसके बुर्ज आकार में वर्गाकार हैं, लेकिन मध्य में स्थित बुर्ज अष्टभुजाकार हैं और वे ढलवा छत पर टिके हुए हैं। मंदिर की चारों दिशाओं में बहु–पुच्छित मेहराबदार तीन–तीन द्वार बने हैं। द्वारों से गर्भगृह की तरफ जाया जा सकता है जिसके चारों ओर परिक्रमा हेतु मार्ग बनाया गया है। इसकी बाह्य और भीतरी दीवारों तथा छत को टेराकोटा शिल्प से अलंकृत किया गया है जिनमें कृष्ण लीला, रामायण और महाभारत के प्रकरणों तथा तत्कालीन लोगों के सामाजिक–आर्थिक व राजनैतिक जीवन की झांकियां चित्रित की गई हैं।

डाक विभाग "भारत के टेराकोटा मंदिर" पर सात स्मारक डाक टिकटों का एक सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण /
विवरणिका / विरूपण मोहर : सुश्री गुलिस्तां
मिनियेचर शीट : सुश्री गुलिस्तां। श्री अमीत गुहा द्वारा प्रदत्त फोटोग्राफ पर आधारित
पाठ : श्री पल्लव बोस

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	1200 पैसे (2), 500 पैसे (5)
Denomination	:	1200 p (2), 500 p (5)
मुद्रित डाक टिकटें	:	500000 प्रत्येक
Stamps Printed	:	500000 each
मुद्रित मिनियेचर शीट्स	:	110000
Miniature sheets Printed	:	110000
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00

TERRACOTTA TEMPLES OF INDIA

Terracotta or baked clay has been in constant use from pre-historic times and is considered among the oldest building materials. The absence of stone or any other building material did not prove to be a deterrent to the architects and artisans of those times. Rather, they baked tales in clay tiles, narrating episodes from mythology and life, breathing life into bricks to give rise to a new form of temple architecture.

Indralath Temple, Ranipur Jharial is one of the tallest ancient brick temples. Height of this temple is 80 feet including the platform that is made of sandstone. The innermost sanctum of this temple houses a recently installed Linga. Besides, it has also the images of Lord Vishnu, Kartikeya and Uma-Maheshwara. This temple is dedicated to Lord Shiva and it is believed that Indra first worshipped Lord Shiva here and erected a temple.

Madan Mohan Temple, Bishnupur was built by Malla king Durjan Singha in 1694 AD. It is a relatively bigger Eka-Ratna temple compared to other similar temples in Bishnupur. The temple has a square base of 12.2 m X 12.2 m and a height of 10.7 m above a moderate platform. The roof of the temple is typical Bengali 'chala' type surmounted by a single 'sikhara' or tower. The temple is mainly built of earthen bricks on a laterite block platform and the frontal facade of the temple is profusely decorated with rich terracotta plaques depicting epic and Puranic episodes and Krishna Leela.

Jor Bangla Temple, Bishnupur, also known as Kesta Rai Temple was built by Malla King Raghunath Singha in 1655 AD. The structure resembles two traditional 'do-chala' village huts put together. The curved roof of this pair of huts is surmounted by a 'char-chalasikhara'. The base of the temple is a square of size 11.8 m X 11.48 m, and the height above the platform is 10.7 m. The walls are decorated mostly with terracotta panels describing scenes from the epics, Krishna Leela, hunting scenes and various other depictions of contemporary social life.

Lalji Temple, Kalna is perhaps the oldest amongst the group of terracotta temples at Kalna, West Bengal. It was built in 1739 AD by Braja Kishori Devi, wife of Maharaja Jagat Ram. Inside the temple premises, a bright yellow Garuda faces the main idols of Radha and Krishna. Miniature panels which surround the base of the temple, depict scenes from the Puranas. A striking feature of this temple is the 25 peaks on the roof.

Nebiya Khera Temple, Bhadwara (9th-10th century AD) is built in panchayatana style with a central shrine and four subsidiary shrines. However, not all subsidiary shrines are at the corners. Three subsidiary shrines are built at the corners but one is built in line with the northern wall of the central shrine. The central shrine is a fine example of Latina shikhara of Nagar temple style. A Shivalinga is placed inside the sanctum. There is a panel on the inner west wall of the sanctum. It appears that one image could be of Kartikeya and another might be of Veerbhadra. The four subsidiary shrines are similar in style and construction, all are without roof and the entrance is triangular in shape.

Lakshman Temple, Sirpur, is a 7th century AD brick temple dedicated to Lord Vishnu. The intricate carvings on the exterior of the temple make it special. These designs include Lord Vishnu, Krishna Leela symbols and Vaishnava Dwarpal. The garbhagriha entrance along with the tower and door carvings are reasonably intact enough to be studied. Above the sanctum door's lintel are carvings showing a reclining Vishnu on Sesha (Anantasayana Vishnu) and a panel on Krishna from Bhagavata Purana. Around the door are bands of carvings which show the ten avatars of Vishnu. The temple stands on a stone jagati platform (about 40'x80') with wide enough space for circumambulation. The temple itself is built of brick except for the carved frame around the garbha-griha (sanctum) made of stone.

Shyam Rai Temple, Bishnupur was built by King Raghunatha Singha in 1643 AD. The temple stands on a low square plinth with a char chala roof surmounted by ratnas or gems at each corner. While the towers in the corners are square-shaped, the central tower is octagonal in shape and they rest on a sloping roof. Each of the four sides of the temple have triple multi-cusped arched gateways, leading to the sanctum around which runs a well-paved circumambulatory path. Its exterior and interior walls and ceiling are emblazoned with terracotta sculptures portraying Krishna Leela, episodes from the Ramayana and Mahabharata, and the socio-economic and political life of the people of the times.

Department of Posts is pleased to issue a set of seven Commemorative Postage Stamps on "Terracotta Temples of India."

Credits:

Stamps/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	: Ms. Gulistaan
Miniature Sheet	: Designed by Ms. Gulistaan based on photograph submitted by Shri Amit Guha
Text	: Shri Pallab Bose